विश्व सेवाधारी कुमारियों के प्रति

बापदादा के अनमोल महावाक्य

जनवरी, 1969 से अप्रैल, 1995 तक की वाणियों से संग्रहित

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)

प्रकाशक :

साहित्य विभाग,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन, आबू पर्वत - ३०७५०२ (राजस्थान)

मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रेस, शान्तिवन, तलहटी,
आबू रोड - ३०७०२६ (राजस्थान)

Copyright :
Brahma Kumaris Ishwariya Vishwavidyalaya
Mount Abu, Rajasthan, India

No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

दो शब्द

जनवरी, 1969 से अप्रैल 1995, तक की सभी अव्यक्त वाणियों में अव्यक्त बापदादा द्वारा कुमारियों के प्रति जो विशेष अनमोल रत्न प्राप्त हुए हैं, उनका यहाँ संग्रह किया गया है। इसमें संगमयुग की परम पूज्य, महान्, भाग्यवान 100 ब्राह्मणों से भी उत्तम कुमारी जीवन का महत्व, उनके प्रति बापदादा की शुभ आशायें, श्रीमत तथा अनमोल शिक्षायें जो समय प्रति समय प्राप्त हुई हैं, उन्हें भिन्न-भिन्न पाइंट्स के रूप में यहाँ प्रकाशित किया गया है। जिन्हें पढ़कर अवश्य ही कुमारियों को आदर्श ब्रह्माकुमारी एवं योग्य शिक्षिका तथा विश्व सेवाधारी बनने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

बापदादा कुमारियों से यही शुभ आशायें रखते हैं कि कुमारियाँ राइट हैण्ड बन विश्व कल्याण के निमित्त बनें, अपने जीवन का फैसला करके अनेक कुल का उद्धार करें।

इस कुमारी जीवन की पवित्रता को सदा कायम रखने के लिए आज के तमोगुणी वातावरण के बीच में रहते, शीतला के बजाए काली रूप बन अपने विकर्मों एवं विकर्मियों को भस्म करें।

आशा है इस प्रकार की अनेकानेक शिक्षाओं से संग्रहित यह संक्षिप्त पुस्तिका विशेष कुमारियाँ बार-बार पढ़कर अपने जीवन को सदाकाल के लिए भाग्यवान बनायेंगी। यह शिक्षायें सिर्फ कुमारियों प्रति ही नहीं अपितु सर्व ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों के प्रति भी हैं, जिसे पढ़ने से अपने जीवन को महान् पवित्र बनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

धन्यवाद,

प्रकाशमणि
मधुबन,
जून, 1995

संगमयुग पर कुमारी जीवन का महत्व एवं विशेषतायें

1. संगमयुग पर कुमारी बनना यह बहुत बड़े से बड़ा भाग्य है। कुमारी अपने जीवन द्वारा अनेकों का जीवन बना सकती है। विश्व कल्याणकारी बन सकती है। कुमारी जीवन समर्थ जीवन है। कुमारियाँ स्वयं शक्तिशाली बन औरों को भी शक्तिशाली बना सकती हैं। अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वायुमण्डल को बदल नाम बाला कर सकती हैं।

2. कुमारी शब्द ही पवित्रता का सूचक है, पवित्रता का ही पूजन है। पवित्रता की शक्ति कुमारियों के पास जमा है, जो जमा होता है वह दूसरों को दिया जाता है। तो सदैव अपने को पवित्रता की देवी समझ दूसरों को पवित्रता की शक्ति देने का श्रेष्ठ कार्य करती रहो।

3. कुमारी अर्थात् देवी। जो उल्टे रास्ते पर जाती वह दासी बन जाती और जो महान् आत्मा बनती वह देवी है। आप सब देवियाँ हो, दासी बनने वाली नहीं। देवियों का कितना पूजन होता है। तो छोटी हो या बड़ी, सब देवियाँ हो। चलते-फिरते यही याद रहे कि हम महान् आत्मायें ऊंची आत्मायें हैं।

4. कुमारियाँ उल्टे रास्ते पर जाने से बच गई। गँवाने के बजाए कमाने वाली जीवन बना दी। लौकिक जीवन में बिना ज्ञान के गँवाना ही गँवाना है और ज्ञानी जीवन में हर सेकेण्ड कमाई ही कमाई है। वैसे तकदीरवान तो सभी ब्राह्मण हैं लेकिन फिर भी कुमारियां हैं डबल तकदीरवान और कुमारी जीवन में ब्रह्माकुमारी बनना, ब्राह्मण बनना यह बहुत महान् है। कम बात नहीं है। साधारण कुमारी से शक्ति रूप हो गई।

5. कुमारी जीवन सदा ही पवित्र मानी जाती है। कुमारियों के पवित्रता की महिमा 100 ब्राह्मणों से भी ज्यादा है। अभी लास्ट जन्म तक भी कुमारियों की पूजा होती है। जब तक कुमारी है तब तक उसके पाँव पड़ते हैं और जब कुमारी शादी करती है तो उसी दिन से कितनों के पाँव पड़ना पड़ता है। नहीं तो कुमारी

को कभी पाँव पड़ने नहीं देते।

6. कुमारी जीवन में परम आत्मा को अपना सच्चा फ्रैन्ड बना लेना - यह कितना श्रेष्ठ भाग्य है। भगवान बाप ऐसा फ्रैन्ड आपको मिला है जो कोई भी दिल की बात करो वह दिलाराम तक ही रहेगी। स्वयं बाप ने आपको सदा के लिए पसन्द कर लिया। आपने भी पक्का पसन्द कर लिया। तो यह दृढ़ संकल्प का हथियाला बँध गया। बापदादा के पास आपके दिल के स्नेह का संकल्प सबसे जल्दी पहुँचता है। यह ब्रह्मा बाप के साथ 21 जन्म सदा सम्बन्ध में आने का पक्का वायदा है, गारण्टी है कि भिन्न नाम रूप सम्बन्ध से साथ रहेंगे।

7. कुमारियाँ घर का श्रृंगार हो। लौकिक में कुमारियों को क्या भी समझें लेकिन पारलौकिक घर में कुमारियाँ महान् हैं। कुमारियाँ हैं तो सेन्टर की रौनक है। कुमारियों को सेवा का बहुत अच्छा चान्स है और मिलने वाला भी है। क्योंकि सेवा बहुत है और सेवाधारी कम हैं। तो कुमारियों को सेवा में आगे बढ़ते कमाल कर दिखानी है।

8. कुमारियाँ अर्थात् कमाल करने वाली। साधारण कुमारी नहीं, अलौकिक कुमारी। लौकिक अर्थात् इस लोक की कुमारियाँ स्वयं देह अभिमान में रह औरों को भी देह अभिमान में गिराती है और आप अलौकिक कुमारियाँ सदा देही अभिमानी बन स्वयं भी उड़ती और दूसरों को भी उड़ाती हो।

9. कुमारी जीवन निर्दोष और सदा श्रेष्ठ गाई और पूजी जाती है। ऐसी श्रेष्ठ और पूज्य आत्मा हो।

10. कुमारियाँ डबल कुमारियाँ हो गई - ब्रह्माकुमारी भी तो कुमारी भी। कितनी महान् हो। कुमारी की अब 84 वें जन्म में भी चरणों की पूजा होती है। तो इतनी पावन बनी हो तब इतनी पूजा हो रही है। कुमारियों को कभी झुकने नहीं देते हैं। कुमारियों के चरणों में सब झुकते हैं। चरण धोकर पीते हैं। देखो बापदादा भी आपको नमस्ते करते हैं। तो ज़रूर इतनी पूज्य हो तब तो बाप भी

नमस्ते करते हैं।

11. कुमारियाँ तो हैं ही उड़ता पंछी। क्योंकि कुमारियाँ अर्थात् सदा हल्की। कोई बोझ नहीं। जो हल्की चीज़ होगी वह ऊपर जायेगी। सदा ऊपर जाने वाला माना ऊंची स्टेज पर जाने वाला। कुमारियों के ऊपर कर्मों के बन्धन का बोझ नहीं है। कुमारी अर्थात् सब रीति से स्वतन्त्र। सिर्फ सम्बन्ध की रीति से नहीं, तन से नहीं लेकिन मन से भी स्वतन्त्र। स्वतन्त्र आत्मा याद में जितनी स्पीड बढ़ाने चाहे बढ़ा सकती है।

12. कुमारियाँ तो है ही बाप की सेवा के हैण्डस। सभी ब्रह्मा की भुजायें हैं। टोकरी वाली नहीं, ताज वाली हैं। दोनों साथ कैसे रखेंगी? कुमारियों को और कोई पूँछ नहीं। जैसे और सबसे निर्बन्धन वैसे माया से भी निर्बन्धन। कुमारियों को देखकर बापदादा को हज़ार गुणा खुशी होती है क्योंकि पतित बनने से बच गई।

13. कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नज़र न लगे। ऐसी अमूल्य रत्न हो। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या! अनेक सम्बन्ध में भटकने से बच गई। एक में ही सर्व सम्बन्ध मिल गये। नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते! सासू का, ननंद का, भाभियों का. . . सबसे बच गई। न जाल में फँसी, न जाल से छुड़ाने का समय ही था।

14. बापदादा कुमारियों को अपने समान सेवाधारी और सर्व धारणाओं का स्वरूप समझते हैं। कुमारी जीवन अर्थात् प्योर (Pure) जीवन। प्योर आत्मायें, श्रेष्ठ आत्मायें हो। बापदादा कुमारियों को महान् पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

15. कुमारियाँ बापदादा के कुल की दीपक हैं। बापदादा खुश होते हैं कि कुमारियाँ समय पर बच गई, नहीं तो उल्टी सीढ़ी चढ़कर फिर उतरनी पड़ती। चढ़ो और उतरो, मेहनत है ना। देखो प्रवृत्ति वालों को कहलाना तो ब्रह्माकुमार-

ब्रह्मावुमारी पड़ता है। ब्रह्माअधरवुमार तो नहीं कहते। तो सीढ़ी उतरे और आपको उतरना नहीं पड़ा। बहुत भाग्यवान हो, समय पर बाप मिल गया। वुमारी ही पूजी जाती, वुमारी जब ग्रहस्थी बन जाती तो बकरी बन सबके आगे सिर झुकाती रहती। तो बच गई। तो सदा अपने को ऐसे भाग्यवान समझ आगे बढ़ते चलो।

16. वुमारी जीवन फिक्र से फारिग जीवन है। घर चलाने का, नौकरी टोकरी का कोई बोझ नहीं है। वुमारियों को स्वतन्त्रता का वरदान स्वत: प्राप्त है। अज्ञान में भी सबका लक्ष्य यही रहता है कि हम स्वतन्त्र रहें। तो स्वतन्त्रता के वरदानी सबको यही वरदान देने वाली हो। कोई के भी चक्र में फँसने वाली नहीं।

17. आप वुमारियों की महानता ज्ञान सहित अविनाशी महानता है। आज-कल के महात्मायें आपके सामने वुछ भी नहीं है। वह एक जन्म में महान् बनेंगे फिर दूसरे जन्म में फिर से बनना पड़ेगा। आप तो जन्म-जन्म की महान् आत्मा हो। अभी की महानता से जन्म-जन्म के लिए महान् हो जायेंगी। 21 जन्म महान् रहेंगी। महानता का आधार आपकी पवित्रता है।

18. बापदादा को वुमारियों को देखकर खुशी होती है। लोगों के पास वुमारी आती है तो दु:ख होता है और बापदादा के पास जितनी वुमारियाँ आयें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। भारत में अष्टमी पर वुमारियों को खास बुलाते हैं। बापदादा हर कन्या को अष्ट शक्ति स्वरूप समझते हैं।

19. वुमारियाँ बापदादा की और ब्राह्मण-वुल की शान हैं। वुमारियों को ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ी लिफ्ट मिली हुई है। फर्स्ट चान्स वुमारियों को मिलता है। वुमारी अगर रेस में आगे जाए तो बहुत अपने को आगे बढ़ा सकती है। एक वुमारी अनेक सेवावेन्द्रों को सम्भाल सकती है। ड्रामा अनुसार यह लिफ्ट गिफ्ट की रीति से मिली हुई है। इसके लिए मेहनत नहीं की है। तो इतना चांस हर वुमारी को है, फिर भी कोई चांस न ले तो क्या कहेंगे! 20. संगमयुग में वुमारी जीवन सर्वश्रेष्ठ वरदानी जीवन है। ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार

कुमारियों को स्वत: प्राप्त है। इस स्वत: प्राप्त हुए वरदान की लकीर को श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। यह भी इस समय को वरदान है, समय भी वरदानी, कुमारी जीवन भी वरदानी, बाप भी वरदाता, कार्य भी वरदान देने का है, इसका पूरा-पूरा लाभ लो।

21. यह कुमारी जीवन रीयल गोल्ड (सच्चा सोना) है। इनमें कोई खाद नहीं है। जो रीयल गोल्ड होता है उसको जैसे चाहे वैसे मोल्ड कर सकते हैं। गोल्ड में जब खाद पड़ जाती है उसके बाद मोल्ड नहीं कर सकते। तो कुमारियाँ नये पत्ते कोमल हैं। कोमल अर्थात् संस्कारों की हड्डियाँ इतनी सख्त नहीं हैं जो चेन्ज न हो सके। तो कोमल संस्कारों को परिवर्तन करना सहज है।

22. कुमारियों के साथ बापदादा का काफी स्नेह है क्योंकि बापदादा परम पवित्र हैं और कुमारियाँ पवित्र हैं। पवित्रता, पवित्रता को खींचती है।

23. कुमारियाँ अभी कोरा कागज हैं। कोरे कागज पर जो कुछ लिखा जाता है वह स्पष्ट होता है। जितना स्पष्ट उतना श्रेष्ठ। अगर स्पष्टता में कमी है तो श्रेष्ठता में भी कमी है। जैसे कहावत है - छोटे सो सुभान अल्लाह। तो बापदादा भी इन्हें कहते हैं छोटे सो समान अल्लाह।

24. कुमारी जीवन में ब्रह्माकुमारी बनने से अनेक बन्धनों से बच गई। कुमारी जीवन अति श्रेष्ठ जीवन है। ग्रहस्थी जीवन में अनेक झंझट हैं। भल बाहर से दिखाई नहीं देते लेकिन अन्दर बहुत बन्धन है। इसलिए बापदादा को बहुत खुशी है कि कुमारियाँ अनेक बन्धनों में बँधने से बच गई।

25. कुमारियों का बहुत-बहुत बड़ा भाग्य है। कुमार 25 वर्ष का होगा लेकिन उनको कोई दादा नहीं कहेगा लेकिन कुमारियों को दादी-दीदी कहेंगे। कुमारियाँ अगर टीचर बन जाती हैं तो दीदी दादी का टाइटल मिल जाता है। दीदी-दादी माना बड़ी। तो दीदी बनना अर्थात् बड़े दिल से स्व का पुरुषार्थ और औरों को पुरुषार्थ कराना। सिर्फ दीदी नाम से नहीं खुश हो जाना। काम भी करना है।

कुमारियों प्रति बापदादा की शुभ आशायें तथा श्रेष्ठ मत

1. सभी कुमारियों प्रति बापदादा की श्रेष्ठ मत है कि विश्व कल्याणकारी बनो। अपना फैंसला स्वयं जज होकर करो। श्रीमत के साथ-साथ अपने मन के उमंग से जो आगे बढ़ते हैं वह सदा सहज आगे बढ़ते हैं। अगर कोई के कहने से या थोड़ा सा शर्म के कारण कि दूसरे क्या कहेंगे, नहीं बनूँगी तो सब मुझे ऐसे देखेंगे कि यह कमजोर है। ऐसे अगर कोई के फोर्स से बनते भी हैं तो परीक्षाओं को पास करने में मेहनत लगती है। उमंग-उत्साह खत्म हो जाता है। इसलिए समझदार बन, सोच-समझकर हर कदम उठाओ। सोचते ही नहीं रहना, लेकिन सोचा, समझा और किया। इसको कहते हैं समझदार।

2. अभी कुमारियों को अपने तकदीर का फैसला स्वयं ही करना है, जितना समय अपने जीवन के फैसले में लगाती हो उतना प्राप्ति का समय चलता जाता है। इसलिए फैंसला करने में समय नहीं गँवाओ। सोचा और किया - इसको कहा जाता है नम्बरवन सौदा करने वाले। सेकेण्ड में फैसला करो जो सोचकर फैसला नहीं कर पाते वह कॉपर का मैडल पाते हैं, जब गोल्डन एज में आना है तो गोल्डन मैडल लो।

3. संगमयुग पर कुमारी बनने का पहला भाग्य तो मिला हुआ है। अभी भाग्य में भाग्य बनाते चलो। इसी भाग्य को कार्य में लगाओ तो भाग्य बढ़ता जायेगा। यदि पहले भाग्य को ही गँवा देंगी तो सदा के सर्व भाग्य को गँवायेंगी। इसलिए भाग्यवान बन अभी और सेवाधारी का भाग्य बनाओ।

4. जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से ही रखना। भक्ति मार्ग में तो सिर्फ गायन किया कि सर्व सम्बन्ध आपसे हैं लेकिन अभी प्रैक्टिकल सर्व सम्बन्धों का रस बाप द्वारा मिलता है तो इसका अनुभव करना। जब सर्व रस एक बाप द्वारा मिलता है तो और कहाँ भी संकल्प जा नहीं सकता।

5. आप श्रेष्ठ कुमारियाँ अपने हर कर्म द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना। हर कर्म से बाप दिखाई दे। कोई भी बोल बोलो तो ऐसा बोल हो जो उस बोल में बाप दिखाई दे। दुनिया में भी कोई बहुत अच्छा बोलने वाले होते हैं तो सब कहते हैं इसको सिखाने वाला कौन है? उसके तरफ दृष्टि जाती है। ऐसे आपके हर कर्म द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हो। ऐसी धारणामूर्त दिव्यमूर्त बनना। भाषण करने वाले तो बहुत बनते हैं लेकिन आप अपने हर कर्म से भाषण करने वाली बनना। अपने चरित्र द्वारा बाप का चित्र दिखाना।

6. आप कुमारियाँ जितना शक्तिशाली बनेंगी उतना सेवा भी शक्तिशाली होगी। अगर स्वयं ही किसी बात में कमजोर होंगी तो सेवा भी कमजोर होगी। इसलिए बापदादा की शुभ आश है कि शक्तिशाली बन शक्तिशाली सेवाधारी बन जाओ। ऐसी तैयारी करते चलो जो समय आने पर सफलतापूर्वक सेवा कर सको और नम्बर ले लो। जहाँ भी हो ट्रेनिंग करते रहो, निमित्त बनी हुई आत्माओं के संग से तैयारी करते रहो तो योग्य सेवाधारी बन जायेंगी।

7. आपकी जीवन निर्बन्धन जीवन है - निर्बन्धन आत्मा का दोनों तरफ रहना अर्थात् लटकना है। कोई-कोई के सरकमस्टान्स होते हैं, थोड़ा बन्धन होता है तो बापदादा भी छुट्टी देते हैं। लेकिन मन का बन्धन है तो यह लटकना हुआ। एक पाँव यहाँ, एक पाँव वहाँ तो क्या होगा! अगर कोई एक पाँव एक नाँव में रखे, दूसरा दूसरी नाँव में रखे तो परेशान होगा ना। इसलिए दोनों पाँव एक नाँव में रखो। सदा अपनी हिम्मत रखो। हिम्मत रखने से सहज पार हो जायेंगी। सदा यह याद रखो कि मेरे साथ बाप है। अकेले नहीं हैं। जो भी करना चाहो कर सकती हो।

8. संगमयुग पर कुमारियों को सेवाधारी बनने का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होता है। जो सेवाधारी है वही विशेष है। सेवाधारी नहीं तो साधारण है। तो सभी अपना भाग्य बनाते आगे बढ़ते चलो। जितना अपने भाग्य के नशे में रहेंगी उतना सहज मायाजीत बन जायेंगी। सदा अपने भाग्य के गीत गाती रहो। यह गीत गाते-गाते

अपने राज्य में पहुँच जायेंगी।

9. सदा यही लक्ष्य रखो कि सर्विसएबुल बनना है। कुमारियाँ जितना सेवा करने चाहे कर सकती हैं। अपने श्रेष्ठ कर्तव्य को जान जल्दी से जल्दी आगे बढ़ो। क्योंकि समय तेज़ रफ्तार से आगे जा रहा है। समय की रफ्तार तेज हो और अपनी कम हो तो समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। इसलिए रफतार को तेज करो। सदा अपने को बाप का हूँ और बाप के लिए हूँ, ऐसा समझकर आगे बढ़ाते चलो।

10. आप 100 ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हो। एक-एक कुमारी को 100 ब्राह्मण तैयार करने हैं। उनकी सेवा करनी है। कमाल के प्लैन सोचो, आत्माओं का कल्याण करो। सदा अपनी मौज में रहो। कभी ज्ञान की मौज में रहो, कभी याद की, कभी प्रेम की। मौजें ही मौजें हैं। संगमयुग है ही आपके लिए मौजों का युग।

11. कुमारियों के ऊपर बापदादा की सदा ही नज़र रहती है। कुमारियाँ स्वयं को क्या बनाती हैं, यह उनके ऊपर है लेकिन बापदादा तो सभी को विश्व का मालिक बनाने आये हैं। सदा विश्व के मालिकपन की खुशी और नशे में रहो। सदा अथक बन सेवा में आगे बढ़ते रहो।

12. कुमारियों को सदा समर्थ बन औरों को भी समर्थ बनाना है। व्यर्थ को सदा के लिये विदाई देनी है। सदा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर औरों को भी शक्तिशाली बनाओ। सदा अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वायुमण्डल को बदल नाम बाला करने की सेवा करो। ''सदा एक बाप दूसरा न कोई'' ऐसे नशे में हर कदम आगे बढ़ाती चलो।

13. कुमारी अर्थात् शक्ति। माया से घबराने वाली नहीं, संहार करने वाली बनना। कमजोर नहीं बहादुर बनना। कभी छोटी मोटी बातों से घबराना नहीं। माया का संहार करने वाली शक्तियाँ हो। सदा श्रेष्ठ प्राप्ति को याद रखेंगी तो छोटी-छोटी बातें कुछ नहीं लगेगी। प्राप्ति को भूल बातों को देखेंगी तो छोटी

बात भी बड़ी लगेगी।

14. कभी इस श्रेष्ठ जीवन से साधारण जीवन में जाने का संकल्प नहीं करना। अगर कोई लखपति हो, उसे कहा जाये तुम गरीब बनो, तो कभी नहीं बनेगा। सरकमस्टांस के कारण कोई बन भी जाता है तो अच्छा नहीं लगता। तो यह जीवन स्वराज्य अधिकारी जीवन है। इससे साधारण जीवन में जा नहीं सकते। अपने विवेक से, जजमेंट से श्रेष्ठ जीवन बनाओ।

15. सदा एक बल एक भरोसा. . . यह याद रखना। हिम्मत रखेंगी तो बाप की मदद मिल जायेगी। कैसा भी कड़ा बंधन हो, वह कड़ा बंधन भी हिम्मत के आधार से सहज छूट जायेगा। जैसे दिखाते हैं जेल के ताले भी खुल गये तो आपके बन्धन भी खुल जायेंगे। अगर थोड़ा भी बंधन है तो उसे योग अग्नि से भस्म कर दो। तोड़ने से तो फिर भी गाँठ लगा सकते इसलिए तोड़ो नहीं लेकिन भस्म करो तो सदा के लिए मुक्त हो जायेंगी। खुद के संकल्पों का बंधन न हो। पक्का सौदा करो - जहाँ बिठाओ, जो कराओ. . . . . ऐसे तैयार रहो तो कोई रोक नहीं सकता। बकरी को बाँध सकता है, शेर को कोई बाँध नहीं सकता। तो शेरनी बनो। शेरनी माना मैदान में आने वाली।

16. आप कुमारियाँ जो चाहे वो कर सकती हो। यही लक्ष्य रखो कि इस ज्ञान की पढ़ाई में नम्बरवन लेना है। विश्व सेवाधारी बनना है, हद के सेवाधारी नहीं। सदा विशेषता यह दिखाओ - बोलो कम, लेकिन जिसके भी सामने जाओ वह आपकी जीवन से पाठ पढ़े। आपकी जीवन ही टीचर बन जाये। मुख से बताने के बाद भी अगर जीवन में नहीं होता तो वह मानते नहीं हैं। इसलिए लक्ष्य रखो कि जीवन द्वारा किसको बाप का बनाना है।

17. कुमारियों को अब सबसे बड़े से बड़ी कमाल करनी है - बाप ने जो कहा वही करना है। बाप का हर बोल करके दिखाना है। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना है। हरेक बाप को प्रत्यक्ष करने वाली निमित्त आत्मा बन जाये तो अमूल्य रत्न हो जायेंगे।

18. सदा यही शुभ संकल्प रखना कि जो स्वयं को प्राप्ति हुई वह औरों को भी करानी है। खजाने जो मिले हैं, वह बाँटते हुए बढ़ाना है। समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लानी है।

19. सदा अपने आपको हल्का रखना। कोई भी बात आये तो डोन्ट केयर करना। जम्प देने से बात नीचे रह जायेगी। हल्के बहुत बड़ा जम्प दे सकते हैं। तो डबल लाइट बनना। जितना याद में स्पीड बढ़ाती जायेगी उतना हल्के रहेंगे।

20. बापदादा कुमारियों के भविष्य को देख करके हर्षित होते हैं। एक-एक कुमारी अनेकों को जगाने के निमित्त बनने वाली है। परिवार कल्याण नहीं, विश्व कल्याण करने वाली है। अगर कुमारी गृहस्थी हो गई तो परिवार कल्याणी हो गई और ब्रह्माकुमारी बन गई तो विश्व कल्याणकारी हो गई। कुमारियाँ सेवाधारी बनें तो बहुत सेन्टर खुल सकते हैं।

21. सभी कुमारियाँ बाप की माला के मणके हो। जो बाप के गले की माला बन गई वह कभी दूसरे के गले की माला नहीं बन सकती। उनका संकल्प स्वप्न भी और कहीं नहीं जा सकता। बाप के बने और सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। तो सर्व अधिकार छोड़कर दो पैसों के पीछे जायेंगी क्या! वह दो पैसे भी तब मिलते जब दो चमाट लगाते हैं। पहले दु:ख की, अशान्ति की चमाट लगती है फिर दो रोटी खाते। तो ऐसी जीवन पसन्द तो नहीं है ना। तो इस कुमारी जीवन में अब डबल भाग्यवान बनो।

22. कुमारियों को वैसे कहाँ-न-कहाँ जाना तो होता ही है। अगर ऐसा श्रेष्ठ घर और इतना श्रेष्ठ वर मिल जाये तो और क्या चाहिए। कुमारियाँ सोचती हैं अच्छा वर, भरपूर घर मिले। तो यह कितना भरपूर घर है जहाँ कोई अप्राप्ति नहीं। तो वाह मेरा भाग्य. . . यही गीत गाते रहो। जैसे चन्द्रमा की चांदनी सबको प्रिय लगती है। ऐसे ज्ञान की रोशनी देने वाली बनो। जैसे स्वयं के भाग्य का सितारा चमका है ऐसे ही सदा औरों के भाग्य का सितारा चमकाओ। तो सभी आपको बार-बार आशीर्वाद देंगे।

23. सभी कुमारियाँ स्कॉलरशिप लेने वाली हो ना! स्कॉलरशिप लेना माना विजयमाला में आना। ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो जो विजय माला में आ जाओ। इतनी पालना जो ले रही हो उसका रिटर्न भी दो। पालना का रिटर्न है बाप समान बनना, स्कॉलरशिप लेना। तो सदा यही दृढ़ संकल्प रखो कि विजयी बन विजय माला के मणके बनेंगे। वह जीवन गिरने की जीवन है, यह जीवन चढ़ने की जीवन है। तो चढ़ने से गिरने की तरफ़ कौन जायेगा!

24. कुमारियों को सेवा के लिए सदा एवररेडी रहना है। किसी भी प्रकार के बन्धन में स्वयं को नहीं बाँधो। अपनी रीति से तैयार रहो। जहाँ कुमारियों का संगठन है वहाँ सेवा में वृद्धि है ही। जहाँ शुद्ध आत्मायें हैं वहाँ सदा ही शुभ कार्य है। आपस में संस्कर मिलाने की सब्जेक्ट में पास होने का लक्ष्य रखो। कभी कोई खिटपिट में नहीं आना। और कहाँ भी दृष्टि-वृत्ति न जाये, एक बाप दूसरा न कोई. . . विशेष कुमारियों को इस बात में सर्टीफिकेट लेना है।

25. सदा आपस में एक मत, स्नेही, सहयोगी होकर रहना। क्योंकि संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों की टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। कभी मन से भी रोना नहीं। निर्मोही रहना। पढ़ाई की हर सब्जेक्ट में नम्बरवन लेना। नम्बरवन आने वाले ही बाप के प्रिय हैं।

26. सदा अपने को विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करने वाली विश्व कल्याणकारी आत्मा समझो। कभी कोई बड़ी स्टेज पर भी भाषण करने के लिए कहा जाये तो तैयार रहना, संकोच नहीं करना, डरना नहीं। क्योंकि आप रिवाजी साधारण कुमारियाँ नहीं हो, श्रेष्ठ कुमारियाँ हो। तो श्रेष्ठ कुमारी श्रेष्ठ काम करेंगी ना। सबसे श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कार्य है बाप का परिचय दे, बाप का बनाना। दुनिया वाले भटक रहे हैं, ढूँढ़ रहे हैं और आपने जान लिया, पा लिया तो कितनी तकदीरवान हो। भगवान की बन गई इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा!

27. सदा इसी खुशी में रहना कि मैं सदा भाग्यवान आत्मा हूँ। यह खुशी

अगर गुम हुई तो फिर कभी रोयेंगे, कभी चिल्लायेंगे। सदा प्यार से और आज्ञाकारी होकर रहना। पारलौकिक बाप की याद में रहना।

28. आप एक-एक कुमारी बहुत बड़ा कार्य कर सकती हो। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बन सकती हो। बापदादा ने विश्व परिवर्तन करने के निमित्त आपको बनाया है। तो सदा बाप और सेवा ही याद रहे। विश्व परिवर्तन की सेवा के पहले अपना परिवर्तन करना। जो पहले की जीवन थी वह बिल्कुल बदल जाये। बस, श्रेष्ठ आत्मा, पवित्र आत्मा हूँ, इसी याद में रहो।

29. कभी भी संग के रंग में नहीं आना। कभी बाहर के खान-पान व फैशन की तरफ आकर्षित नहीं होना। सदैव याद में रहकर बनाया हुआ भोजन, ब्रह्मा भोजन ही खाना। नौकरी की टोकरी उठाने का संकल्प कभी नहीं करो। अगर कोई कारण है तो वह हुई मजबूरी। लेकिन अपना वर्तमान और भविष्य सदा याद रखो। अगर किसी भी कारण वश लौकिक कार्य करना भी पड़ता है तो मन की लगन बाप और सेवा में रहे। सदा राइट हैण्ड बनने का लक्ष्य हो, लेफ्ट हैण्ड नहीं। अगर आप शक्तियाँ विजय का झण्डा लेकर मैदान में आ जाओ तो रावण राज्य का समय समाप्त हो जाये।

30. जब ब्रह्माकुमारी बनना है तो फिर डिग्री क्या करेंगी? वह पढ़ाई तो निमित्त मात्र है, जिससे बुद्धि विशाल बने उसके लिए जनरल नॉलेज पढ़ी जाती। ऐसे नहीं सोचो - बाकी एक साल में यह डिग्री लें फिर दूसरे साल में यह डिग्री लें.. ऐसे करते-करते काल आ जाए तो? इसलिए जो निमित्त हैं उनसे राय लेते रहो - आगे पढ़ें या न पढ़ें? पढ़ाई के शौक में अपना भविष्य और वर्तमान छोड़ न दो। इससे धोखा खा लेंगे। अपने जीवन का फैसला स्वयं खुद करो। माँ बाप कहे, नहीं, स्वयं जज बनो।

31. सदा यही लक्ष्य रखना कि हमें सेवा में साथी बनना ही है। सेवा में सहयोगी बनने का दृढ़ संकल्प करो। आपके हर संकल्प में सेवा समाई हुई हो। जहाँ भी रहो वहाँ सदा अपने को पूज्य महान् आत्मा समझकर चलना। न

आपकी दृष्टि किसी में जाए और न किसी की दृष्टि आप पर जाए। ऐसी पूज्य आत्मा समझकर चलना। पूज्य आत्मा की स्मृति में रहने वाली कुमारियों के तरफ किसी की भी बुरी दृष्टि नहीं जा सकती। सदा इस बात में अपने को सावधान रखना। कभी भी अपने को हल्की स्मृति में नहीं रखना।

32. कभी इस अलबेलेपन में नहीं आना कि हम ब्रह्माकुमारी तो बन गई, दादी-दीदी बन गई। नहीं, लेकिन मैं श्रेष्ठ आत्मा, पूज्य आत्मा, शक्ति रूप आत्मा हूँ, मुझ शक्ति के ऊपर किसी की नज़र जा नहीं सकती। अगर किसी की गई तो दिखाते हैं वह भैंस बन गया। भैंस अर्थात् काली आत्मा बन गई और भैंस बुद्धि अर्थात् मोटी बुद्धि हो जायेगी। अगर किसी की भी बुरी दृष्टि जाती है तो वह मोटी बुद्धि, भैंस बुद्धि बन जायेगा। क्यों किसी की दृष्टि जाये। इसमें भी कमज़ोरी कुमारियों की कहेंगे। इसलिए अपने को सदा चेक करना है।

33. जो निमित्त बड़े हैं उन्हें इसी बात का डर रहता है कि कोई की नज़र न लग जाए। इसलिए कभी किसी से प्रभावित नहीं होना। यह सेवाधारी बहुत अच्छा है, यह सेवा में अच्छा साथी मददगार है, नहीं। यह तो इतना करता है। नहीं, बाप कराता है। मैं इतनी सेवा करती हूँ। नहीं, बाप मेरे द्वारा कराता है। तो न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों को कमजोर बनने की मार्जिन दो। इस बात में कभी किसी की रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए।

34. माया को परखने वाली बनना। कोई चतुराई से आपको अपना बनाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें लेकर आयेंगे, खाने की, पहनने की. . . तो यह भी माया समझना, उस चीज़ को चीज़ नहीं समझना, वह सांप है। सांप जरूर काटेगा। यह पाउडर-क्रीम नहीं लाया लेकिन सांप है। जब इतनी कड़ी दृष्टि रखेंगी तब सेफ रह सकेंगी। नहीं तो किसी में भी माया प्रवेश होकर अपना बनाने की कोशिश बहुत करेगी। माया बहुत बड़े रूप से आयेगी। लेकिन परखने वाले सदा विजयी बनना। हार नहीं खाना। कुमारियां अगर इस बात में शक्ति रूप बन गई तो वाह-वाह की तालियां बजेंगी। बापदादा भी विजय के पुष्प बरसायेंगे।

35. संकल्प में बीती हुई बातों को याद नहीं करना। ऐसे समझना जैसे वह पिछले जन्म की बात हो गई। कभी सोचना भी नहीं। समय पर समझ आ जाना – यह भी तकदीरवान की निशानी है। समय पर फल देने वाला वृक्ष मूल्यवान कहा जाता है। संसार में रखा ही क्या है! चिंता और दु:ख के सिवाए और कुछ है नहीं। तो पक्का सौदा करना। कोई बढ़िया आकर्षण वाली चीज आये, कोई आकर्षण वाले व्यक्ति सामने आयें तो आकर्षित नहीं हो जाना।

36. सदा अपने को शिव शक्ति कम्बाइन्ड समझकर चलना। जो जिसके साथ रहते हैं उन पर संग का रंग जरूर लगता है। तो जब बाप के साथ रहेंगी तो जो बाप के गुण, जो बाप का कर्तव्य वही आपका हो जायेगा। सदा यह लक्ष्य रखना कि बाप समान बनना ही है। हर बात में चेक करो कि यह बाप का संकल्प, बोल व कर्म हैं? अगर है तो करो, नहीं तो परिवर्तन कर दो। क्योंकि साधारण कर्म तो आधाकल्प किया, अभी तो बाप समान विश्व सेवाधारी बनना है। हिम्मत और उमंग से सदा आगे बढ़ते रहना।

37. अभी आप शक्तियां मैदान पर आओ। सदा उमंग हुल्लास में रहते नम्बरवन बनो। नम्बरवन उमंग हुल्लास वाले घरों में कैसे रहेंगे। पिंजरे के पंछी नहीं, स्वतन्त्र पंछी बनो। जो पिंजरों में बंधने वाले हैं उन्हें नम्बरवन नहीं कह सकते। अभी निर्बन्धन हो जाओ। जो शक्तिशाली होता है उनके आगे कोई भी कुछ कर नहीं सकता। जैसे तेज आग जल रही है तो उसके आगे कोई भी आयेगा नहीं, दूर भागेगा। तो आप भी योग-अग्नि को ऐसा जलाओ जो कोई बंधन डालने वाला आ ही न सके। लगन फुलफोर्स में हो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे। अगर अभी तक बंधन हैं तो लगन है, लेकिन लगन अग्नि नहीं बनी है।

38. दुनिया में कहते हैं एक-एक कुमारी जाकर अपना घर बसायेगी और यहाँ बाप कहते हैं एक-एक कुमारी सेवाकेन्द्र खोल अनेकों का कल्याण करेगी। लौकिक माँ बाप घर बनाकर देते हैं उससे तो गिरती कला होती है और अलौकिक बाप, पारलौकिक बाप सेन्टर खोलकर देते हैं जिससे स्व उन्नति भी

हो और अन्य आत्माओं की भी उन्नति हो।

39. जैसे बाप सुप्रीम है, कभी देह अभिमान में नहीं आता ऐसे कभी देह अभिमान में नहीं आना। दुनिया में देह अभिमान वाली कुमारियां तो बहुत हैं लेकिन आप हो रूहानी कुमारियां, सदा रूह अर्थात् आत्मा की स्मृति में रहना। आत्मा बन आत्मा को देखना। इस रूहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना, देह अभिमान में रहना अर्थात् माया की तरफ गिरना।

40. सदा एक बाप के प्यार में रहना। जिनका बाप से प्यार है वह रोज़ प्यार से याद करेंगे। प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ेंगे। जो प्यार से कार्य किया जाता है उसमें सफलता होती है। कहने से करते तो थोड़ा समय सफलता होती है। प्यार से, अपने मन से चलने वाले सदा सहज चलते हैं। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या? तो एक बार के अनुभवी कभी धोखे में नहीं आ सकते। माया भिन्न-भिन्न रूप में आयेगी, कपड़ों के रूप में आयेगी। माँ-बाप के मोह के रूप में आयेगी, सिनेमा के रूप में आयेगी, टी.वी. के रूप में आयेगी, घूमने फिरने के रूप में आयेगी। माया कहेगी कि यह कुमारियां हमारी बनें, बाप कहेंगे हमारी बनें। तो क्या करेंगी? माया को भगाने में होशियार बन जाओ। कभी भी संग के रंग में नहीं आना। सदा बहादुर, अमर और अविनाशी रहना।

41. कुमारी जीवन में ज्ञान मिल गया, रास्ता मिल गया, मंज़िल मिल गई–यह देख खुशी में रहो। बहुत भाग्यवान हो। आज के संसार की हालत देखो–दु:ख-दर्द के बिना और कोई बात नहीं। गटर में गिरते हुए चोट खाते रहते, आज का यह संसार है। सुनते हो ना–आज शादी की कल जल मरी, आज शादी की कल घर आ गई। एक तो गटर में गिरी फिर और चोट पर चोट खाई। तो ऐसी चोट खाने का संकल्प भी नहीं करना। अपने को भाग्यवान समझो, जो बाप ने आपको बचा लिया। बच गये, बाप के बन गये इसी खुशी में रहो।

42. दुनिया में कहते हैं कुमारी वह जो दोनों कुल का कल्याण करे। लेकिन यहाँ तो सारा विश्व ही आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियां अपने हद के कुल का कल्याण करती और श्रेष्ठ कुमारियां विश्व के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसे हिम्मत रखो। इसमें डरने की बात नहीं। बाप सदा साथ है। जब बाप साथ है तो डर की बात नहीं। अच्छा है भटकने की मेहनत से छूट गई। उल्टे रास्ते पर जाकर फिर लौटना, इसमें भी समय वेस्ट हो जाता है। तो समय, शक्तियां सब बच गई इसलिए वाह मेरा भाग्य, यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमज़ोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना।

43. कुमारियों को देख बाप को यही खुशी रहती है कि यह सब इतने राइट हैण्ड तैयार हो रहे हैं। लेफ्ट हैण्ड नहीं। लेफ्ट हैण्ड जो काम करते वह थोड़ा नीचे ऊपर हो सकता है। राइट हैण्ड से काम जल्दी और अच्छा होता है। तो कितनी महान् हो, सदा महान् रहना। जहाँ भेजें वहाँ जायेंगी ना। जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगे ना। किसी के संग में नहीं आना। अगर कोई आपके ऊपर अपना रंग लगाने चाहे तो आप उस पर अपना रंग लगा देना।

44. कुमारियों को बापदादा कहते हैं तुम सब देवियां हो। देवियां सदा मुस्कराती रहती हैं, कभी रोती नहीं। दृष्टि से, हाथों से सदा देने वाली दाता होती हैं। देवता वा देवी का अर्थ ही है देने वाला। तो सबको क्या देंगी? सभी को सुख-शान्ति, आनंद, प्रेम, सर्व खजाने देने वाली देवियां हो।

45. कुमारियों का हर संकल्प, वाणी तथा कर्म कमाल का होना चाहिए। कुमारियां पवित्र होने के कारण अपनी धारणा को तेज बना सकती हैं। ऐसी कमाल का कर्तव्य कर दिखाना जो हर एक के मुख से यही निकले कि इन्हों का कर्तव्य कमाल का है। जैसे बापदादा के बोल सुनते हो तो मुख से निकलता है कि आज की मुरली तो कमाल की है। तो आपका हर कर्म कमाल का होना चाहिए। बापदादा को फालो करना, ऐसे नहीं कहना कि कोशिश करेंगे, जब तक कोशिश करेंगे तब तक कशिश नहीं होगी। कुमारियां कमाल करेंगी तो साथी साथ देगा, नहीं तो साथी साक्षी हो जायेगा। इसलिए साथी को साथ

रखना।

46. कुमारियों को हर गुण, हर शक्ति, हर ज्ञान की पाइंट के अनुभवों में सम्पन्न बनना है। अनुभव बड़े से बड़ी अथॉरिटी है। अथॉरिटी की झलक चेहरे पर और चलन पर स्वत: आती है। अनुभव की अथॉरिटी वाले कभी किसी प्रकार से माया के भिन्न-भिन्न रॉयल रूपों से धोखा नहीं खायेंगे। वह सदा अपने को भरपूर अनुभव करेंगे। किसी भी शक्ति से खाली नहीं होंगे। इसलिए स्पीकर की सीट के साथ-साथ सर्व अनुभवों की अथॉरिटी का आसन भी लेना है। इस आसन पर स्थित रहने से सहजयोगी, सदा के योगी, स्वत: योगी बन जायेंगे।

47. आप सभी ने आजकल की फैशनेबुल दुनिया का मन से, तन से किनारा कर बाप को सहारा बना लिया। इस दृढ़ संकल्प की बहुत-बहुत मुबारक। लेकिन सदा इसी संकल्प में जीते रहना। बापदादा यही वरदान देते हैं कि सदा विजयी, सदा महावीरनी और सदा सफलतामूर्त रहना। कभी संकल्पों के टक्कर में नहीं आना। कभी व्यर्थ संकल्पों के तूफान में नहीं आना। माया के वार से हार नहीं खाना।

48. कुमारियां अर्थात् महावीरनियां। महावीरनी जो संकल्प करेंगी वही स्वरूप बनेंगी। ऐसे नहीं – देखेंगे, करेंगे. . . ऐसे गें-गें वाली नहीं। जो संकल्प किया उसमें दृढ़ रहना अर्थात् विजय का झण्डा लहराना। कभी भी कमजोर संकल्प नहीं करना।

49. कुमारियों को निर्विघ्न हैण्ड बनना है। ऐसे नहीं सेवा भी करो और सेवा के साथ-साथ मेहनत भी लेते रहो। यह नहीं करना। सेवा के साथ अगर कम्पलेन्ट निकलती रहे तो सेवा का फल नहीं निकलता है। इसलिए कभी भी विघ्न रूप बन दादी-दीदी के सामने नहीं आना। मददगार हैण्ड बनना, खुद सेवा नहीं लेना। पक्का संकल्प करो कि सदा निर्विघ्न रहेंगे और सेवा को निर्विघ्न बढ़ायेंगे।

50. कुमारियों को सिर्फ अपने वा अपने हद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं लेकिन सर्व के कल्याण की वृत्ति रखनी है। मैं तो

ब्रह्माकुमारी बन गई, पवित्र आत्मा बन गई, अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राज़ी होकर चल रहे हैं, यह बाप समान बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है। बाप विश्व कल्याणकारी है, बच्चे सिर्फ स्व-कल्याणकारी हों तो ऐसी जोड़ी अच्छी नहीं। ऐसे नहीं स्वयं खाओ पियो और अपनी मौज में रहो, नहीं। बांटों और बढ़ाओ। यही डायरेक्शन सभी के प्रति है।

51. कुमारियों को गोल्डन मैडल लेना है, सिल्वर नहीं। जो सोचते हैं मैं तो ठीक चल रही हूँ, कोई गलती नहीं करती, लौकिक अलौकिक जीवन ठीक निभा रही हूँ, कोई खिटपिट नहीं, कोई संगठन के संस्कारों का टक्कर नहीं है–यह है सिल्वर मैडल। गोल्डल मैडल अर्थात् बेहद की सेवा, सेवा की प्राप्ति के समय, बाप समान बनने का गोल्डन चांस लेना।

52. कई कुमारियां सोचती हैं कि सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे। जो समर्पण नहीं होंगी वह समान कैसे बनेंगी? बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना या सिर्फ सहयोगी बना? जगत अम्बा ने क्या किया? वह भी कन्या ही रही। तो फालो फादर मदर...ऐसे नहीं इसका जीवन मुझे अच्छा लगता है, यह फालो सिस्टर हो गया। समर्पित होने में डरो नहीं। डर सिर्फ अपनी कमज़ोरी से होता है। कमजोरियों को नहीं देखो, न स्वयं कमजोर बनो, न दूसरों की कमजोरियों को देखो।

53. कुमारियों ने अगर पढ़ाई पढ़कर कार्य में नहीं लगाया, पढ़ाई के बाद भी गृहस्थी में रही तो लौकिक में भी कहते हैं पढ़ाई से क्या लाभ। अनपढ़ भी बच्चे सम्भालते और यह भी सम्भालती तो फर्क ही क्या हुआ? ऐसे ही पढ़ाई पढ़कर स्टेज पर आओ तो पढ़ाई की वैल्यु है। अगर यहाँ चान्स मिलता है तो डिग्री स्वयं ही मिल जायेगी। यह डिग्री कम नहीं है। जगदम्बा सरस्वती को कितनी बड़ी डिग्री मिली। यहाँ कितनी बड़ी डिग्री मिलती है–मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिमान्. . . इसमें एम.ए., बी.ए., डॉक्टर, इन्जीनियर सब आ जाता है।

55. अभी विश्व की सेवा का ताज पहनो, विश्व आपको धन्य आत्मा, महान् आत्मा मानें। इतना बड़ा ताज पहनने वाले टोकरी उठाने का संकल्प भी नहीं कर सकते। 63 जन्म तो टोकरी उठाते रहे अब ताज मिलता है तो पहनना चाहिए ना। धीरे-धीरे लौकिक को सन्तुष्ट करते अपने को निर्बन्धन करो। निर्बन्धन होने का प्लैन बनाओ। बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बंधन स्वत: टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता है तो लौकिक, अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लीयर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मात्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मजबूरी भी मुहब्बत में बदल जाती है।

55. कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत कभी नहीं छोड़ना। दूसरे की कमज़ोरी देखकर स्वयं दिलशिकस्त नहीं होना। पता नहीं हमारा तो ऐसा नहीं होगा, अगर एक कोई खड्डे में गिरता है तो दूसरा क्या करेगा? इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना, सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ते रहना। किसी भी आकर्षण में नीचे नहीं आना। शिकारी जब फंसाते हैं तो अच्छा-अच्छा दाना डाल देते हैं। माया भी ऐसे करती है इसलिए सदा उड़ती कला में रहना तो सेफ रहेंगे। पीछे की बात सोचना, पीछे देखना अर्थात् रावण का आना।

56. संगमयुग आगे बढ़ने का समय है, ब्रह्माकुमारी बन गई, ज्ञान स्वरूप बन गई, यह तो बहुत अच्छा। अब आगे बढ़ो। कुछ आगे कदम बढ़ाओ, वहाँ ही नहीं ठहरो। कमजोर को नहीं देखो। शक्तियों को देखो, बकरियों को नहीं। बकरियों को देखेंगे तो खुद का कांध भी नीचे हो जायेगा। कमजोर को देखने से ही डर होता है इसलिए उन्हें मत देखो। विश्व की शक्तियां हो तो स्वयं को आफर करो। ट्रायल करके देखो–जब कोई बढ़िया चीज से दिल लग जाती है तो घटिया स्वत: छूट जाती है।

57. आप कुमारियां विशेष आत्मायें हो तो विशेष कार्य के निमित्त भी बनना है। एक-एक कुमारी को 21 कुल तारना है। जब भी जहाँ आर्डर मिले, हाजिर। जिस समय जो भी सेवा मिले हाजिर। सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्षफल खाना।

प्रत्यक्षफल खाने से आत्मा शक्तिशाली बन जाती है। लौकिक में तो एक मास नौकरी करेंगी फिर पीछे तनख्वाह मिलेगी। यहाँ तो प्रत्यक्ष फल मिलता है। भविष्य तो जमा ही होता है लेकिन वर्तमान भी मिलता है। तो डबल फल मिलने वाला कार्य पहले करना चाहिए ना।

58. कईयों को बापदादा, दादी दीदी डायरेक्शन देते हैं कि लौकिक सर्विस करो, श्रीमत पर करने से जिम्मेवार खुद नहीं रहते। अपने मन के लगाव से, कमज़ोरी से करते तो श्रेष्ठ नहीं बन सकते। ट्रायल में स्वयं भी सन्तुष्ट रहें और दूसरों को भी सन्तुष्ट करें तो सर्टीफिकेट मिल जाता है। अपने को मिलाकर चलने का लक्ष्य हो। मुझे बदलना है, स्वयं को बदलने की भावना वाला सभी बातों में विजयी हो जाता है। दूसरा बदले, यह देखने वाला धोखा खा लेता है। इसलिए सदैव मुझे बदलना है, मुझे करना है, पहले हर बात में स्वयं को आगे करना है, अभिमान में नहीं, करने में आगे करो, तो सफलता ही सफलता है।

59. बापदादा को आप सब कुमारियां प्रिय तो हो ही। क्योंकि बाप भी आपकी मदद से कार्य करा रहे हैं। लेकिन मददगार के साथ-साथ हिम्मतवान भी बनना है। छोटी-छोटी बातों में कभी हिम्मतहीन नहीं बनना। हिम्मतवान बनने से जो भी इच्छायें हैं वह पूर्ण हो जायेंगी। हिम्मत आयेगी हर समय, हर कदम पर, हर संकल्प में बलिहार होने से। जितना-जितना अपने को बलिहार बनायेंगे उतना हिम्मत आती जायेगी और बाप के गले के हार में नजदीक आ जायेंगे। अभी बलिहार होंगे फिर प्रभू के गले का हार बनेंगे। बलिहार बनकर कर्म करने से दूसरों को भी बलिहार बनायेंगे।

60. कुमारियों को अपनी दृष्टि के ऊपर बहुत ध्यान रखना है। दृष्टि से देह की बजाए देही ही दिखाई दे। दृष्टि यथार्थ है तो धोखा नहीं खा सकते। साक्षात्कार दृष्टि से ही होता है। आपकी दृष्टि से ही अनेक आत्मायें अपने यथार्थ घर और यथार्थ राजधानी को देखेंगी। जो आपकी वृत्ति में होगा वही अन्य आपकी दृष्टि से देखेंगे। अगर वृत्ति देह अभिमान की है, चंचल है तो आपकी दृष्टि से साक्षात्कार भी ऐसा ही होगा। तो अपनी वृत्ति के सुधार से अपनी दृष्टि

को दिव्य बनाओ।

61. बापदादा का विशेष यही इशारा है कि दृष्टि को बदलकर साक्षात्कार मूर्त बनो। देखने वाले अनुभव करें कि यह नैन नहीं लेकिन यह एक जादू की डिब्बियां हैं। जैसे जादू की डिब्बी में भिन्न-भिन्न नज़ारे देखते हैं वैसे आपके नयनों में दिव्य रंगत देखें। नैन साक्षात्कार के साधन बन जायें।

62. कुमारियां जो टीचर्स बनती हैं–उन्हें पाइंटस सिर्फ बुद्धि में नहीं रखनी हैं या सिर्फ वर्णन नहीं करनी है लेकिन पाइंट रूप बनकर पाइंट वर्णन करनी है। अगर स्वयं पाइंट स्वरूप स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो पाइंट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए पाइंट रूप बन एक एक ब्रहमाकुमारी को ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष कराना है। जैसे कापी में पाइंट नोट करने का शौक है ऐसे पाइंट रूप बनना और ब्रह्मा बाप के चरित्रों की कॉपी बनना।

63. ज्ञान-योग के साथ-साथ कन्याओं को विशेष जगत-माता पन के, शक्ति पन के, दिव्यगुणधारी के संस्कार भी स्वयं में भरने हैं तब नाम बाला कर सकेंगे। कन्या होते भी स्मृति रहे जगत-माता हूँ। यह जो आत्मायें तरस रही हैं, दु:खी हो चिल्ला रही हैं इन्हों की ज्ञान और योग से पालना करनी है। साथ-साथ कुमारीपन अर्थात् प्युरिटी भी हो, दृष्टि में रूहानियत हो, जिस्मानीपन निकल जाये।

64. हर एक को लक्ष्य रखना है कि मैं नम्बरवन बनकर दिखाऊंगी। नम्बरवन बनने के लिए अपने सर्व पुराने संस्कारों के ऊपर विन करना है। इतनी हिम्मत और हुल्लास रखना है। कभी भी अपने अन्दर पुराने संस्कारों को प्रगट होने नहीं देना। संकल्प से ही उनको खत्म करना। अगर संकल्प आता भी है तो उसे स्थान देकर उनकी पालना नहीं करना है, फिर संकल्प में भी संस्कार इमर्ज नहीं होंगे। एक दो के भिन्न-भिन्न स्वभाव तो होंगे ही लेकिन उनसे बचने के लिए सरलता का गुण धारण करना। जितनी सरल बुद्धि, सरल दृष्टि, सरल वाणी होगी उतना ही स्वभावों की टक्कर नहीं होगी।

65. जैसे मधुबन अच्छा लगता है, बाप से प्यार है, पढ़ाई से भी अच्छा प्यार है, ऐसे अब स्वयं को सेवा के लिए आफर करो। जो स्वयं को आफर करता है वह निर्विघ्न चलता है, जो कहने से चलता है वह रुकता और चलता है। कोई-कोई सोचती हैं कि बाहर रहकर सेवा करना अच्छा है लेकिन बाहर रहकर सेवा करने और त्याग करके सेवा करने में अन्तर है। सिर्फ बाहर थोड़ा देखने में मजे से रहते हैं। जो समर्पण के महत्व को जानते हैं वह कई बातों से किनारे हो जाते हैं, मेहनत से छूट जाते हैं, बहुत आराम से रहते हैं।

66. कुमारियां तो हैं ही होवनहार सेवाधारी। पाई पैसे वाली कुमारियां नौकरी की टोकरी उठाती लेकिन नौकरी करना अर्थात् स्वयं को पालना। लक्ष्य रखो कि विश्व की आत्माओं को बाप की पालना दें। जब अनेक आत्माओं के निमित्त बन सकती हो तो सिर्फ एक अपने को पालना क्यों? बापदादा को हंसी आती है–टोकरी का बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाती हैं लेकिन भगवान के घर में अर्थात् सेवा स्थानों में रहने की हिम्मत नहीं रखती हैं। ऐसी कमजोर कुमारियां नहीं बनो। विश्व सेवा के निमित्त बनो।

67. संगमयुग के इस एक जन्म में बेहद की सेवा के निमित्त बनने का गोल्डन चांस कुमारियों को मिलता है। बाप स्वयं सेवा की आफर करते हैं कि योग्य राइट हैण्ड बनो। योग्य राइट हैण्ड बनने से अनेक आत्माओं की दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे। यह कमाई कितनी बड़ी है। वह पैसे तो 5 हजार व 5 लाख भी कमा लो लेकिन वहीं घर में रह जायेंगे या बैंक में रह जायेंगे। यह कमाई तो साथ जायेगी, अनेक जन्म साथ रहेगी। इसलिए लक्ष्य सदा ऊंचा रखो, साधारण लक्ष्य नहीं रखना। बेहद का लक्ष्य हो, हद का नहीं।

68. योग्य राइट हैण्ड बनने के लिए सदा ध्यान रखना–मेरा तो एक बाबा और कोई बात नहीं। जो योग्य नहीं वह सेवा करने के बजाए सेवा लेते रहते हैं। जो योग्य सेवाधारी नहीं बनते वही डरते हैं कैसे चलेंगे, चल सकेंगे, नहीं चल सकेंगे। जो योग्य होता है वह बेपरवाह बादशाह होता है। वह इन बातों से डरता नहीं है। योग्यता मनुष्य को वैल्युबुल बनाती है। सेवा की योग्यता यह

सबसे बड़ी योग्यता है। ऐसी योग्य आत्मा को कोई भी बात रोक नहीं सकती।

69. कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी? कुमारियां टीचर बनेंगी? कुमारियां सभी अपने चेहरे से, चलन से, पवित्रता की परिभाषा का भाषण करेंगी। मुख से भाषण तो सभी करते हैं लेकिन आपका चेहरा और चलन सेवा करे। जो भी आपके सामने आये, सम्बन्ध में आये, वो अनुभव करे कि यह तो पवित्रता की देवियां हैं। कभी भी कोई कुमारी किसके भी सामने जाये तो साधारण कुमारी नहीं दिखाई दे। पवित्रता की देवी अनुभव हो। जैसे शुरू-शुरू में जब तपस्या के बाद सेवा पर निकले तो आपको सभी देवियां समझते थे ना। उन्हों को साधारण स्वरूप नहीं दिखाई देता था, देवी रूप दिखाई देता था। देवियाँ आई हैं, कुमारियाँ नहीं। तो हर कुमारी अपने को देवी स्वरूप अनुभव करे और अनुभव कराये। देवी रूप के ऊपर कभी भी कोई की व्यर्थ नज़र नहीं जा सकती। औरों को भी बचा लेंगे और स्वयं भी बच जायेंगे। ऐसे नहीं कह सकते कि इसकी बुरी दृष्टि थी ना, मैं तो पवित्र हूँ लेकिन दूसरे की बुरी दृष्टि थी। अगर आपकी पावरफुल पवित्र दृष्टि है तो जैसे सूर्य अंधकार को रहने नहीं देता, समाप्त हो जाता है, अंधकार रोशनी में बदल जाता है। तो आपकी पवित्र दृष्टि, दैवी स्वरूप आसुरी संस्कार को समाप्त कर देगा।

70. ब्रह्माकुमारी अर्थात् न्यारी कुमारी। कुमारियाँ तो अनेक हैं लेकिन आप ब्रह्माकुमारियां हो। ब्रह्माकुमारी माना ही कमाल करने वाली। जहाँ भी जाओ वहाँ विशेष आत्मा अनुभव करें। एक बाप से पूरा सच्चा-सच्चा प्यार हो। कोई व्यक्ति के तरफ वैभव के तरफ नहीं। जब एक बाप से प्यार होगा तो सेफ रहेंगे। बाप से प्यार कम होगा तो फिर कहीं न कहीं फंस जायेंगे। तो कहाँ फंसने वाली तो नहीं हो? देखना, सर्टीफिकेट मिलेगा। हिम्मत अच्छी रखी है अब हिम्मत और मदद से आगे बढ़ती रहो।

71. पुरुषार्थ में कभी नीचे, कभी ऊपर नहीं होना, सदा उड़ते रहना। क्योंकि समय कम है और मंज़िल श्रेष्ठ है। तो बिना उड़ती कला के मंज़िल पर पहुंचना मुश्किल है इसलिए सदा उड़ते रहो और उड़ने का साधन है सदा सर्व

प्राप्तियों को इमर्ज रूप में स्मृति में रखना। क्या-क्या मिला है, क्या थे और क्या बन गये। कल क्या और आज क्या। तो प्राप्तियों की खुशी कभी नीचे हलचल में नहीं लायेगी। नीचे आना तो छोड़ो लेकिन हलचल भी नहीं, अचल। क्योंकि जो सम्पन्न होता है वह हलचल में नहीं आता है। सम्पन्नता अचल बनाती है, हलचल से छुड़ा देती है। तो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा बनो, ज़रा भी अप्राप्ति न हो। ऐसे नहीं कि सेवा का चांस मिले, मेरे को आगे रखा जाए, मेरा नाम हो, मैं तो इतनी योग्य पढ़ी लिखी हूँ। साधन मिलें तो सेवा करूं। लेकिन जितने साधन उतनी बुद्धि जाती है। इसलिए जैसे हो, जहाँ भी हो सदा राज़ी रहो। जो थोड़े में सन्तुष्ट रहता है उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। सन्तुष्टता सबसे बड़ा खज़ाना है। जो असन्तुष्ट आत्मा है उसके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होगी। एक इच्छा पूरी होगी और 10 इच्छायें उत्पन्न होंगी। इसलिए हद के इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

72. कुमारियों को सदा हर बात में आगे रहना है। पका हुआ फल बन करके निकलना है। कच्चा गिर नहीं जाना। सभी पढ़ाई पूरी करके सेन्टर सम्भालेगी ना। अगर माँ बाप कहें नहीं, सेन्टर पर नहीं जाना है तो क्या करेंगी? यदि अपनी हिम्मत है तो कोई भी किसको रोक नहीं सकता है। थोड़ा-थोड़ा आकर्षण होगा तो रोकने वाले रोकेंगे।

कुमारियों के प्रति बापदादा की अनमोल शिक्षाएँ

1. जब भी मन में कोई मुश्किलात महसूस हो तो मन की बातें मन में नहीं रखना। मन की बातें स्थान देखकर वाणी में लाना। मन में कोई भी व्यर्थ संकल्प या विकल्प आये तो निमित्त बने हुए स्थान के सिवाए किसी से नहीं कहना। किचड़े के लिए भी स्थान मुकरर होता है, यहाँ-वहाँ डालने से वायुमण्डल में फैल जाता है। इसलिए कभी भी वायुमण्डल को बिगाड़ने के निमित्त नहीं बनना।

2. कुमारियों को श्रृंगार करना अच्छा लगता है तो हर वक्त ज्ञान के गहनों से सजी हुई रहना, विजयी रत्न का तिलक, स्वदर्शन चक्र की चिंदी, शंख ध्वनि रूपी कुंडल, नियम व मर्यादा रूपी कंगन और ज्ञान के घुंघरू सदा पहनकर रहना। ध्यान रखना माया कभी यह श्रृंगार उतार न दे। बापदादा को आपसे जो उम्मीदें हैं, उन उम्मीदों का सितारा मस्तक के बीच सदा चमकता रहे।

3. कुमारी अवस्था में स्वच्छता और अपने को ठीक रीति से सजाने श्रृंगारने का शौक रहता है, तो ज्ञान और गुणों से स्वयं को श्रृंगारते रहना। अविनाशी शस्त्रधारी वा श्रृंगारी बनना। कितना भी कोई आपकी हिम्मत को हिलाने की कोशिश करे लेकिन प्रतिज्ञा जो की है उस प्रतिज्ञा की शक्ति से ज़रा भी पाँव नहीं हिलाना। एक तरफ सारी सृष्टि हो, दूसरे तरफ आप एक भी हो तो भी आपकी शक्ति श्रेष्ठ है। क्योंकि सर्वशक्तिमान् बाप आपका साथी है। जब शिव और शक्तियाँ साथी हैं तो सृष्टि की आत्माएँ उसके आगे क्या हैं! अनेक होते भी एक के समान नहीं हैं। इतना निश्चयबुद्धि से रहना।

4. जहाँ भी कोई गुण देखो वह जल्दी से उठाना क्योंकि हर एक में कोई-न-कोई विशेष गुण होता है। हर एक से गुण उठाते-उठाते सर्वगुण सम्पन्न बनना। अगर अवगुण देखो तो पीठ कर लेना। (सीता वाले खिलौने का मिसाल)

आप सब सच्ची सीता तो हो ही, इसलिए गुण देखो तो धारण करना, अवगुण को देखते हुए नहीं देखना, सुनते हुए नहीं सुनना, न सोचना अर्थात् पीठ देना।

5. सदा के लिए पक्के वा अचल रहने के लिए पढ़ाई और सेवा दोनों का संग हो। बाप का बनने के बाद और कहीं पर भी संकल्प न जाए। ऐसा पक्का सौदा करो। कोई लखपति का बनकर गरीब का नहीं बनता। तो जितना बाप के संग में रहेंगी उतना पक्का रंग होगा। पक्का रंग लग गया तो राइट हैण्ड बन जायेंगी। अनेक सेवाकेन्द्र खुल जायेंगे।

6. कुमारियों को किसी भी बंधन में नहीं बंधना है। संगदोष या सम्बंध के बंधनों से मुकत होने का श्रेष्ठ लक्ष्य रखना है। क्या करें, बंधन है, क्या करें नौकरी करनी है...इसको कहा जाता है बंधन वाली। तो न सम्बन्ध का बंधन हो, न नौकरी का बंधन हो। जो दोनों बंधनों से न्यारे हैं वही बाप के प्यारे बनते हैं।

7. स्वयं को शक्ति सेना की शक्तियाँ समझना। सेवा छोड़कर जाने वाली नहीं। स्वप्न में भी कोई हिला न सके। कभी भी किसी के संगदोष में नहीं आना। सदा बाप के कदम पर कदम रखते आगे बढ़ना। वह तो स्थूल पाँव के ऊपर पाँव रखती हैं लेकिन आप सभी संकल्प रूपी कदम पर कदम रखने वाली हो। जो बाप का संकल्प हो वह आपका हो। हर संकल्प समर्थ करना अर्थात् बाप के समान कदम के पीछे कदम रखना।

8. सदैव अपनी चेकिंग करना – कि मेरे बुद्धि का संग किसके साथ है! एक के संग में रहना तो संगदोष से छूट जायेंगी। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देता है इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप, दूसरे हम, तीसरा न कोई – जब ऐसी स्थिति होगी तब आपके मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा। अगर बुद्धि में तीसरा कोई आ गया तो तीसरा नेत्र बंद हो जायेगा।

9. अपनी हिम्मत को अविनाशी बनाने के लिए एक बात सदा ध्यान में रखना – किसी के भी संगदोष में कभी नहीं आना। कई प्रकार के आकर्षण पेपर

के रूप में आयेंगे लेकिन आकर्षित नहीं होना। संगदोष कई प्रकार का होता है। जैसे – माया संकल्पों के रूप में अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करेगी तो इस व्यर्थ संकल्पों या माया के आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना। परिवार के साथ-साथ कोई भी सम्बंध का संग, सहेली का संग भी सम्बंध का संग है, उस संग में नहीं आना। कोई के वाणी के संगदोष में भी नहीं आना। वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है, उससे भी अपने को बचाना और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर किसी समस्या अनुसार या सम्बंधी के स्नेह-वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में लगा देगा। इसलिए इससे भी अपने को बचाना। कर्म का संग भी होता है। ऐसे भिन्न-भिन्न संगदोष के पेपर में पास हो गई तो समीप आ जायेंगी। संगदोष में आई तो दूर हो जायेंगी।

10. सफल टीचर व ब्रह्माकुमारी बनने के लिए कुमारी जीवन के महत्व को स्मृति में रखना। कुमारी जीवन का महत्व तब है जब वह पवित्र है। अगर कुमारी, कुमारी होते हुए भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं। जो अपनी विशेषता को छोड़ देती वह वर्तमान जीवन के अतीन्द्रिय सुख और भविष्य के राज्य के सुख से वंचित हो जाती हैं। इसलिए जो बाप से पहला वायदा है – कि एक बाप दूसरा न कोई, इस वायदे को सदा निभाते रहना। माया कितना भी इस विशेषता को हिलाना चाहे तो भी अंगद समान रहना।

11. सरेण्डर की लिस्ट में आने के लिए सम्पूर्ण पवित्रता के साथ-साथ परिवर्तन शक्ति भी आवश्यक है। किसी भी आत्मा के साथ रहो, कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति है तो सफल टीचर वा सेवाधारी बन जायेंगी। कम्प्लीट टीचर वा 100 ब्राह्मणों से उत्तम कन्या बनने के लिए अल्पकाल का वैराग्य न हो, सदाकाल का वैराग्य अर्थात् त्याग और तपस्या हो। कोई भी शिकायत किसी द्वारा भी न सुनी जाए। तब कहेंगे विशेष कुमारी।

12. जो बाप की श्रीमत है उसी प्रमाण, उसी लकीर के अन्दर सदा रहना। लकीर के अन्दर रहने वाली ही सच्ची सीता है। लकीर के बाहर पाँव निकालेंगी तो रावण आ जायेगा। रावण इंतज़ार में रहता है कि कहाँ कोई पाँव निकाले और मैं भगाऊं। तो कुमारी अर्थात् सच्ची सीता। यहाँ से बाहर जाकर बदल न जाना। जैसे नाम है बाल ब्रह्मचारिणी वैसे संकल्प भी इतना पवित्र हो। कहाँ भी दृष्टि या वृत्ति न जाये, एक बाप दूसरा न कोई – ऐसी शिव – शक्तियाँ बन स्कॉलरशिप लेना। यह याद रखना तो किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी।

13. आप कुमारियाँ पूज्य हो। अपने पूज्य स्वरूप को स्मृति में रखते हुए हर कर्म करना। हर कर्म करने से पहले चेक करो कि यह कार्य पूज्य आत्मा के प्रमाण है। अगर नहीं है तो उसे परिवर्तन कर लो। पूज्य आत्माएँ कभी साधारण नहीं होती, महान् होती हैं।

14. कुमारी जीवन हँस के समान स्वच्छ-पवित्र जीवन है। हँस का स्वरूप है पवित्र और करत्तव्य है सदा गुण रूपी मोती धारण करना। अवगुण रूपी कंकड़ कभी भी बुद्धि में स्वीकार नहीं करना। लेकिन इस कर्त्तव्य को पालन करने के लिए बापदादा की आज्ञा मिली है – बुरा न देखना, बुरा न सुनना, न बोलना, न सोचना...इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगी तो होलीहँस बनकर ज्ञान सागर के कंठे पर बैठी रहेंगी। हँसों का ठिकाना है ही सागर। तो अपने को हँस समझकर प्रतिज्ञाओं को पालन करते रहना।

15. सदैव लक्ष्य रखना कि मुझे बदलना है, मुझे करना है, करने में पहले स्वयं को आगे करना, अभिमान में नहीं। अपने को मिलाकर चलने का लक्ष्य रखना। स्वयं को बदलने की भावना सभी बातों में विजयी बना देगी। दूसरा बदले, यह देखने वाला धोखा खा लेता है।

16. वर्तमान समय की परिस्थितियों के प्रमाण जितना ही प्रेम-स्वरूप उतना ही शक्ति-स्वरूप भी बनना है। जैसे देवियों के नैन प्रेम में डूबे हुए दिखाते हैं

लेकिन सूरत से, शक्ति के संस्कार देखने में आते हैं। नयनों में प्रेम, दया, शीतलता हो, मातापन के संस्कार हो। लेकिन चलन से शक्ति रूप प्रगट हो। दोनों ही साथ और समान रहें।

17. बाहरमुखता में कभी नहीं आना। एकांत में आनंद के अनुभवी बनना। एकता और एकांत इन दो बातों पर विशेष ध्यान देना।

18. बापदादा कुमारियों को तीन सम्बंधों से तीन शिक्षाओं की सौगात देते हैं – बाप रूप से शिक्षा की सौगात है कि सदैव बापदादा और जो निमित्त बनी हुई बहनें हैं या जो दैवी परिवार है उन सबसे आज्ञाकारी वफादार बन करके चलना है। टीचर के रूप में शिक्षा की सौगात है – कि एकमत होकर रहना, एकरस और एक की ही याद में रहना।

19. कुमारियों को ताज, तख्त और तिलक सदा धारण करके रहना है। ताज को धारण करने के लिए चाहिए त्याग, तिलक को धारण करने के लिए चाहिए तपस्या और तख्त पर विराजमान होने के लिए चाहिए सेवा। इन तीनों बातों से तीन चीज़ें धारण होंगी। तीनों में से एक भी छूटे नहीं तब शूरवीर बन सकेंगी।

20. सर्विस पर उपस्थित होने के लिए मैं-पन का त्याग करना है। मैंने किया, मैं यह जानती हूँ, मैं यह कर सकती हूँ, यह मैं-पन का जो अभिमान है, उसका त्याग। मैं-पन की बजाए बापदादा की सुनाई हुई ज्ञान की बातों का वर्णन करो। मैं यह जानती हूँ, नहीं। बापदादा द्वारा यह जाना है। ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है उसका भी त्याग। जब इतनी त्याग की वृत्ति-दृष्टि होगी तब स्मृति में बापदादा रहेगा और विश्व की सर्विस के निमित्त बन सकेंगी।

21. अपनी धारणा को अविनाशी कायम रखने के लिए कुमारियों को दो बातें याद रखनी हैं – एक – सभी बातों में सिम्पल रहना और दूसरा – अपने को सैम्पल समझना है। जैसे आप सैम्पल बन दिखायेंगी ऐसे ही अनेक आत्माएँ भी यह सौदा करने के लिए पात्र बनेंगी।

22. सदा एक छाप लगाकर जाना कि मिटेंगे, लेकिन हटेंगे नहीं। संस्कारों में, चाहे सर्विस में, चाहे सम्बंध में सब बातों में अपने आपको मिटाना है, हटना नहीं है। हटना कमज़ोरों का काम है। शिव-शक्तियाँ अपने को मिटाती हैं, न कि हटाती हैं।

23. कुमारियों को पास विद् ऑनर होने की प्रतिज्ञा करनी है। पास विद् ऑनर अर्थात् मन में भी संकल्पों की सज़ायें न खायें। धर्मराज की सज़ाओं की बात पीछे है परन्तु अपने संकल्पों की भी उलझन अर्थात् सज़ाओं से परे। वाणी, कर्म, सम्बंध, सम्पर्क की बात तो छोड़ो लेकिन संकल्पों में भी उलझन न आये – ऐसी प्रतिज्ञा करनी है।

24. कुमारियाँ अभी कोमल पत्ते हैं। कोमल पत्ते को कमाल करनी है। अपने ईश्वरीय चरित्र के ऊपर सबको आकर्षित करना है, अपने ऊपर नहीं। वृक्ष में जब कोमल छोटे पत्ते निकलते हैं तो वह बहुत प्रिय लगते हैं। चिड़िया भी कोमल पत्तों को ही खाती हैं। तो माया रूपी चिड़िया के प्यारे नहीं, लेकिन बापदादा के प्यारे रहना।

25. कुमारियों का कोमल बनना है लेकिन किसमें? संस्कार मोड़ने में कोमल बनना। लेकिन कोमल दिल से बचकर रहना। सदा एक स्लोगन याद रखना कि अधिकारी बनेंगे, अधीनता को मिटायेंगे। कभी अधीन नहीं बनना। इस शरीर के अधिकारी बनकर चलना और माया के भी अधिकारी बन उसको अपने अधीन करना। सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना। सदा अधिकारी रहना।

26. कुमारियों को इस ज्ञान मान सरोवर में नहाकर ऐसी परियाँ बनना है जो पाँव अर्थात् बुद्धि इस पांच तत्व की आकर्षण से ऊंची अर्थात् परे रहे। माया व कोई भी मायावी टच न कर सके। परियाँ अर्थात् फरिश्ते, उन्हें है ही प्रकाशमय काया। वह देह की स्मृति से भी परे हैं।

27. बापदादा हर एक कुमारी में शुभ उम्मीदें रखते हैं। उम्मीदों को पूर्ण करने के लिए एक वायदा करो – 'सोचना, बोलना और करना तीनों ही समान

होंगे।' सभी शिक्षाओं का सार है – किसी भी कर्म से, देखने से, उठने से, बैठने-चलने-सोने से फरिश्तापन दिखाई दे। हर कर्म में अलौकिकता हो। कोई भी लौकिकता, कर्म या संस्कारों में न हो। ऐसा सर्वोत्तम पुरूषार्थी बन बापदादा का शो करना है। ऐसे नहीं, सोचा तो था कि यह न करें लेकिन कर लिया। नहीं, सोचना-बोलना-करना तीनों एक समान हों।

28. कुमारियों को कभी किसी के भी स्नेह के, संस्कारों के तथा वायुमण्डल के अधीन नहीं होना है। ऐसे शब्द मुख से तो क्या मन में संकल्प रूप में भी न आयें – कि क्या करें, मजबूर हैं। किसी भी व्यक्ति के अथवा वायुमण्डल के मज़बूर नहीं होना है, मज़बूत बनना है।

29. माया ईश्वरीय रूप से भी अपना साथी बनाने की कोशिश करेगी लेकिन अपने वायदे को याद रखना। वायदा किया है – एक हैं, एक के हैं, एक के ही रहेंगे, एक की ही मत पर चलेंगे...यह सदैव पक्का रखना। माया ईश्वरीय रूप से भी सामने आयेगी जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। तो परखने की शक्ति से फौरन परख कर किनारा कर लेना। उसके संग में कभी नहीं आना।

30. कुमारियाँ नॉलेजफुल तो हैं ही, अब सक्सेसफुल होने के लिए फ़ेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि बनना है। एक तो अपने में पूरा फ़ेथ हो, दूसरा बापदादा में और तीसरा दैवी परिवार की आत्माओं में भी फ़ेथफुल होना पड़ता है। जितना फ़ेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि होकर कर्त्तव्य करेंगी तो विजय अर्थात् सफलता सहज प्राप्त होगी। हर कर्त्तव्य, हर बोल पावरफुल हो जायेगा।

31. कुमारियों को पुरुषार्थ करके हर बात में, हर गुणों में फुल होना है। फुल होंगे तो सम्पूर्ण अव्यक्त फरिश्ता की डिग्री मिलेगी। अगर यह डिग्री नहीं ली तो धर्मराजपुरी में जाने की डिक्री (नोटिस) मिलेगी। जिनकी डिक्री निकलती है वह शर्मशार होते हैं इसलिए क्वालीफाइड बनकर डिग्री लो।

32. वर्तमान समय बहुत नाज़ुक समय है, अभी नाज़ से चलने का समय

नहीं है। अगर नाज़ुक समय में कोई नाज़ों से चलेंगे तो रिज़ल्ट में बहुत नुकसान हो जायेगा इसलिए अभी विकराल रूपधारी संहारीमूर्त बनना है। विकर्मियों के ऊपर विकराल रूप धारण करो। अपनी दृष्टि से विकर्मी संस्कार सेकण्ड में भस्म कर दो।

33. कुमारियों को समस्या मिटाने वाला बनना है, न कि खुद समस्या बन जाना है। किसी भी समस्या का सामना करने के लिए काली रूप चाहिए। विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना है। सर्विस पर, कर्त्तव्य पर जब हो तो काली रूप रखो। काली रूप होंगी तो कभी किसी पर बलि नहीं चढ़ेगी लेकिन अनेकों को बाप पर बलि चढ़ायेंगी। आपका ऐसा कड़ा रूप हो जो माया के किसी भी विघ्न का सामना कर सको।

34. अब स्नेह को समाना है, शक्तिरूप को प्रत्यक्ष करना है। कुमारियों को एक ही समय में तीन बातें धारण करनी हैं – एक तो मस्तक में मातृ स्नेहपन का गुण, रूप में रूहानियत और वाणी में वज्र। जब यह तीन बातें इकट्ठी धारण होंगी तब विकर्म और विकर्मी भस्म हो जायेंगे। आपकी नज़र से विकर्मी आत्माएँ कम्पायमान होंगी। श्रृंगार तो बहुत किया अब संघार करो। अब अपनी कमज़ोरियों को विदाई दो तब सृष्टि के कल्याणकारी बन सकेंगी।

35. कुमारियों से बापदादा का खास स्नेह है क्योंकि बापदादा समझते हैं अगर इन्हों को ईश्वरीय स्नेह नहीं मिलेगा तो और किसी के स्नेह में लटक जायेंगी। बाप रहमदिल है, रहम के कारण स्नेह है, भविष्य बचाव के कारण विशेष स्नेह रहता है। तो स्नेह का रिटर्न देने के लिए एक तो मनसा सहित प्युरिटी हो। मनसा में कोई संशय न आये। दूसरा – वाणी और कर्म साकार बाप समान हो।

36. कुमारियों को संगदोष से तो बचना ही है लेकिन एक और विशेष बात है – अभी आत्मा एवं शरीर के रूप से आप सभी को बहकाने वाले बहुत रूप सामने आयेंगे लेकिन उसमें बहकना नहीं है। बहुत परीक्षाओं में पास होने के

लिए पूरी परख चाहिए। यदि परख नहीं सकेंगे कि माया किस रूप में आ रही है, यह विघ्न किस प्रकार का है...तो परीक्षाओं में फेल हो जायेंगे।

37. कुमारियों ने साहस तो रखा है लेकिन जब साहस रखते हैं तो माया का सामना शुरू हो जाता है इसलिए सामना करने के लिए हिम्मत भी पहले से ही अपने में रखनी है। कोई भी परीक्षा किस भी रूप में आये, परीक्षा को पास करने के लिए हाई जम्प देने का अभ्यास हो। हाई जम्प देने के लिए हल्कापन चाहिए। ऐसा हल्का बनो जो एक दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते एक दो से सहज हिल-मिल जाओ।

38. कुमारियों को एक सेकण्ड में कोई भी आसुरी संस्कार का संघार करने वाली संघारकारी मूर्त्त बनना है। जहाँ संघार करना है वहाँ रचना नहीं रच लेना और जहाँ रचना रचनी है वहाँ संघार नहीं कर लेना। यह भी बुद्धि में ज्ञान चाहिए। कहाँ मास्टर ब्रह्मा बनना है, तो कहाँ मास्टर शंकर बनना है। अगर संघार के बजाए उल्टी रचना रच ली, तो व्यर्थ संकल्प बिच्छू टिंडन मिसल पैदा हो जायेंगे। तो ऐसी रचना कभी नहीं रचना जो स्वयं को भी काटे। ऐसी रचना रचने से सावधान। जिस समय जिस कर्त्तव्य की आवश्यकता है, उस समय वही कर्त्तव्य करना है।

39. जब आपने अपने को एक के आगे अर्पण कर दिया तो किसी और के आगे संकल्प से भी अर्पण नहीं होना। संकल्प भी बहुत धोखा देता है। जब कभी हार खाने का मौका आये तो याद रखना कि हम हार खाने वाले नहीं लेकिन बापदादा के गले का हार बनने वाले हैं।

40. कुमारी रूप में कभी-कभी कमज़ोरी आ जाती है इसलिए अपने को शक्ति रूप समझकर चलना। सहयोग और स्नेह के साथ-साथ अब शक्ति भरनी है। शक्तियों में विशेष सहनशक्ति चाहिए। इस विशेष शक्ति को धारण करने से शक्ति रूप बन जायेंगी। साथ-साथ निर्भयता और सन्तुष्टता का गुण धारण करना। इससे सर्वगुण स्वत: आ जायेंगे।

41. कुमारियों को श्रेष्ठ मणि बनने के लिए मन-वाणी और कर्म में सरल बनना है। लेकिन सरलता के साथ-साथ सहनशीलता भी चाहिए। सरलता और सहनशीलता, मधुरता और शक्ति रूप, ज्वाला और शीतलता...इन सबका बैलेंस हो। कर्त्तव्य ज्वाला का हो, सूरत शीतलता की हो।

42. कुमारियों प्रति बापदादा की विशेष शिक्षा है – कि कोमलता को कमाल में परिवर्तन करो। कभी कोमलता दिखाना नहीं। संस्कारों को परिवर्तन करने में कोमल बनना। कर्म में कोमल नहीं बनना। उसमें शक्ति रूप बनना। कोमल को तीर जल्दी लग जाता है इसलिए शक्ति रूप का कवच पहनकर रखना। कभी भी चेहरे पर, नयन-चैन पर कोमलता नहीं लाना। सिर्फ मोल्ड होने में रीयल गोल्ड बनना।

43. कुमारियों को रोना बहुत जल्दी आता है। क्योंकि कोमल हैं। तो ऐसी कोमल नहीं बनो। अपने श्रेष्ठ भाग्य के नशे में रहो। कभी भी मूड ऑफ नहीं होनी चाहिए। मूड ऑफ होना–यह भी मन का रोना है।

44. देखा जाता है कुमार-कुमारियों से माया का भी कुछ एक्स्ट्रा प्यार है लेकिन ये प्यार नहीं है, धोखा है। पहले माया बहुत प्यार करती है लेकिन समाया हुआ धोखा होता है। अभी कोई कुमार और कुमारी की माया के प्रति रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए। अभी विश्व परिवर्तक बन सभी एक दो के सहयोगी बन आगे उड़ना।

ऐसी शिक्षाओं को धारण कर अपने आपको ऑफर करो तो बापदादा भी आपको विश्व का तख्त ऑफर करेंगे फिर सबकी आफरीन मिलेगी। गैस के गुब्बारे कभी नहीं बनना, वह बहुत तेज़ उड़ते हैं लेकिन अल्पकाल के लिए। यहाँ अपने में अविनाशी एनर्जी भरना। टैम्प्रेरी ऑक्सीजन का आधार नहीं लेना।

कुमारियों से बापदादा के कुछ प्रश्न

1. कुमारियों ने बाप से जो पहला वायदा किया है – एक बाप दूसरा न कोई वह पूरा निभा रही हो?
2. एक बाप से पक्का सौदा किया है? इस सौदे को कोई तुड़ाने चाहे तो टूट सकता है?
3. सारे विश्व में आकर्षण करने वाला बाप ही अनुभव होता है या और कोई दिखाई पड़ता है? टी.वी या फिल्म की आकर्षण तो आकर्षित नहीं करती?
4. जहाँ बिठायें, जो कराएँ. . . ऐसे तैयार हो? जहाँ भी सेवा पर भेजें वहाँ जायेंगी? स्वयं को सेवा के लिए ऑफर किया है?
5. अपने जीवन का फैसला अपने विवेक से, जजमेंट से किया है या माँ-बाप के कहने पर? समझदार बनकर अनुभव कर रही हो या एक दो के संग में चल रही हो?
6. इस जीवन से सन्तुष्ट हो? कभी वह जीवन-खाना-पीना, घूमना, श्रृंगार करना...यह याद तो नहीं आता है? दूसरों को देखकर यह तो नहीं आता कि हम भी थोड़ा टेस्ट करें?
7. एक बाप के गले की माला बनेंगी या और किसके गले की माला बनने का संकल्प है?
8. सदा ईश्वरीय जीवन का फल – 'खुशी और शक्ति' दोनों का अनुभव होता है?
9. सदा विजयी, सदा महावीरनी, सदा सफलतामूर्त रहने का अमर, अविनाशी संकल्प किया है या थोड़े समय के लिये किया है?
10. इस कुमारी जीवन में स्वतंत्र हो या परतंत्र हो? मन के व्यर्थ कमज़ोर संकल्पों के जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रही हो?

õõõõõ-õõõõõö***

विश्व सेवाधारी कुमारियों के प्रति

बापदादा के

अनमोल महावाक्य

जनवरी, 1969 से
अप्रैल, 1995 तक
की वाणियों से संग्रहित

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय

पाण्डव भवन, आबू पर्वत (राज.)